डॉ पृथ्वी कुमार सिंह, प्राचार्य, लोकनायक नारायण महाविद्यालय, [illegible], समाजशास्त्र विभाग, ग्रामीण समाजशास्त्र
पत्र सं.- ?, बी० ए० (H), खण्ड – III

(5) सामाजिक दृष्टिकोण में अंतर – गाँव वाले भाग्यवादी होते हैं। वे प्रकृति तथा ईश्वर में विश्वास करते हैं। नगरवासी धन को ही अधिक महत्व देते हैं। नगरवासी धर्म के बजाय बुद्धि एवं तर्क को अधिक महत्व देते हैं। बोगार्डस लिखते हैं कि "गाँव के लोग स्पष्ट बोलनेवाले, निष्कपट और स्वाभिमानी होते हैं वे नागरिक जीवन के बहुत से पक्षों की कृत्रिमता से घृणा करते हैं।"

(6) सामाजिक गतिशीलता और स्थायित्व में अंतर – ग्रामीण जीवन स्थायित्व का प्रतीक है तो नगरीय जीवन गतिशीलता का। नगरवासी साहसी होते हैं और किसी भी प्रकार का जोखिम उठाने को तैयार होते हैं। अतः वे नवीनता, विकास एवं प्रगति के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन करते हैं जबकि गाँव के लोग स्थान छोड़ना नहीं चाहते। बाढ़, सूखा, महामारी और प्राकृतिक विपदाओं के आने पर ही वे अपना स्थान छोड़ने को तैयार होते हैं।

(7) आर्थिक जीवन में अंतर – (Difference in Economic life) नगरीय एवं ग्रामीण आर्थिक जीवन में भी काफी अंतर है। गाँव मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है तो नगर व्यवसायों पर। गाँववासियों का जीवन स्तर नगरवासियों की तुलना में निम्न होता है। नगर के लोग गाँववालों की अपेक्षा अधिक खर्चीले होते हैं। रॉस ने कहा कि "ग्रामीण जीवन सुझाव देता है, 'बचाओ' नागरिक जीवन पुकारता है 'खर्च करो।'" नगर में आय से खर्च कहीं अधिक है। आराम और विलासिता पर नगर वाले अधिक खर्च करते हैं तो ग्रामवासी की खर्च की सीमा आवश्यकताओं तक ही होती है। गाँव की अपेक्षा नगरों में श्रम-विभाजन एवं विशेषीकरण अधिक पाया जाता है।

(8) सांस्कृतिक जीवन में अंतर (Difference in cultural life) गाँवों में सांस्कृतिक स्थिरता पाई जाती है जबकि नगर की संस्कृति परिवर्तनशील है। सांस्कृतिक स्थिरता ग्रामों में कूपमण्डूकता और रूढ़िवादिता को जन्म देती है जबकि नगरों में सांस्कृतिक परिवर्तनशीलता प्रगति की द्योतक है। ग्रामीण संस्कृति में परम्परा का अधिक महत्व है जबकि नगरों में नवीनता एवं फैशन को अधिक महत्व दिया जाता है।

(9) सामाजिक विघटन में अंतर – (Difference in Social Disorganization)
गांवों में वैयक्तिक विघटन कम है जबकि नगरों में व्यक्ति मानसिक संघर्ष एवं निराशा से पीड़ित है। वहां आये दिन आत्महत्याएँ, चोरी, डकैती, बलात्कार, विवाह-विच्छेद आदि की घटनाएं होती रहती हैं ग्रामीण समाज में अपराध और बाल-अपराध नगरों की तुलना में कम ही पाए जाते हैं।

(10) मनोवैज्ञानिक अंतर (Psychological Difference) –
ग्रामीण लोग सामुदायिक भावना को अधिक महत्व देते हैं। उनमें सहनशीलता एवं प्रेम अधिक पाया जाता है। नगर में व्यक्तिवादी भावना प्रबल होती है। वे सामूहिकता के स्थान पर व्यक्तिगत हितों को अधिक महत्व देते हैं।

(11) अन्य अंतर – (a) गांवों की अपेक्षा नगरों में फैशन का प्रचलन पाया जाता है। (b) गांवों में धर्म की प्रधानता होती है, नगरों में कर्म की। (c) गांवों की अपेक्षा नगरों में तर्क एवं विज्ञान में अधिक विश्वास किया जाता है।

ग्रामीण एवं नगरीय जीवन में इन विभिन्नताओं को देखकर ही कुछ विद्वान यह प्रश्न करते हैं कि क्या गांव और नगर एक-दूसरे से बिल्कुल पृथक समुदाय हैं? किंतु वास्तविकता यह है कि इनमें भेद मात्रा का है। मैकाइवर एवं पेज का कहना है कि "गांव एवं नगर दोनों ही समान हैं, इनमें से न तो कोई दूसरे से अधिक प्राकृतिक है और न ही कृत्रिम।"